Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 1364–1368

बिहार में महिला सशक्तीकरण में जीविका की भूमिका
ROLE OF LIVELIHOOD IN WOMEN EMPOWERMENT IN BIHAR

Raushan Kumar [1], Dr. Shivendra Singh [2]

[1]शोधार्थी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार- 845401
[2]सहायक प्रोफ़ेसर, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार 845401

ABSTRACT

भारत देश के हर राज्य के ग्रामीणों में किसी भी कार्य मे मदद लेने एवम देने की परंपरा पुरातन काल से ही चली आ रही हैं, 'सामुदायिकता की भावना' ग्रामीण समाज की सबसे बड़ी विशेषता है। इन ग्रामीण कृषकों की खेती के अतिरिक्त इनके पास आय के कोइ अतिरिक्त साधन नहीं होने के कारण खेती के 5 से 6 माह बाद बचे समय में इन ग्रामीणों की आय बंद हो जाती हैं जिसके कारण उन्हें आकस्मिक खर्चों के लिए जमीन व आभूषणों को बंधक रखनी पड़ती है क्यूकि बैंक के शाखाओं का विस्तृत नेटवर्क होते हुए भी ग्रामीणों की पहुंच उन तक बहुत कम हैं। परन्तु अब बहुत से किसान, स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद से कुछ हद तक अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने लगे हैं पिछले कुछ वर्षों में, विकासशील देशों में महिला सशक्तिकरण और आर्थिक परिणामों में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग के रूप में आर्थिक लक्ष्यों के साथ महिला समूहों को संस्थागत बनाने पर अधिक जोर दिया गया है। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), बचत समूह, मातृ समूह, स्वास्थ्य समूह और सामुदायिक गतिशीलता समूह इन कार्यक्रमों के उदाहरण हैं। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण उनकी व्यक्तिगत सफलता के साथ-साथ उनके परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन बताता है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए जीविका जैसे माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रमों का उपयोग कैसे किया जा सकता है। जब एक महिला माइक्रोक्रेडिट कार्यक्रम में नामांकन करती है, तो उसकी सशक्तिकरण की भावना आसमान छू जाती है।जीविका भले ही ऋण प्राप्त करने वाली महिलाएं आय सृजन गतिविधियों के लिए धन का उपयोग नहीं करती हैं, फिर भी वे ऐसा करती हैं। अधिक संसाधन हैं. जो महिलाएं ऋण प्राप्त करती हैं उनकी संसाधनों तक अधिक पहुंच होती है, भले ही वे ऋण का उपयोग न करती हों। आय-सृजन पहलों के लिए धन। सामान्य तौर पर, महिलाएं सक्रिय रूप से सामाजिक बदलावों को प्रोत्साहित करती हैं और उन्हें आसान बनाती हैं। समाज की कल्याण-वर्धक सहायता के केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होने के बजाय। परिणामस्वरूप, वे सक्रिय व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं।

हालाँकि महिला विकास और सशक्तिकरण परियोजना के मुख्य उद्देश्य नहीं हैं, वे समुदायों में महिलाओं पर आधारित स्वयं सहायता समूह के गठन के माध्यम से इसे प्राप्त करने के प्रमुख साधन हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि महिलाओं की भूमिकाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं विकास प्रक्रिया और पारस्परिक सशक्तिकरण प्राप्त करना।

Keywords: जीविका, ग्रामीण महिला, आर्थिक सशक्तिकरण

Corresponding Author
Raushan Kumar,
shivendrasingh@mgcub.ac.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3253

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. परिचय

बिहार में स्वयं सहायता समूह

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए गए हैं ऐसी ही एक पहल है महिला नेतृत्व वाली स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की स्थापना जो महिलाओं को सशक्त बनाने के साधन के रूप में वित्तीय समावेशन और बचत को प्राथमिकता देते हैं। बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना, जिसे अक्सर स्थानीय रूप से जीविका के रूप में जाना जाता है, मुख्य रूप से उन महिला संगठनों की सहायता करती है जो कम आय, वंचित और हाशिए पर स्थित सामाजिक पृष्ठभूमि से आती हैं, वे इन महिलाओं को संगठित करते हैं। जीविका परियोजना बिहार में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली गरीब महिलाओं को अधिक स्वतंत्र बनाने में मदद करने के लिए सरकार द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम है। वे उन महिलाओं के साथ समूह बनाते हैं जो समान परिस्थितियों में हैं। यह परियोजना इन महिलाओं को उनके जीवन को बेहतर बनाने और पैसा कमाने के लिए प्रशिक्षण और संसाधन देकर मदद करती है। वे महिलाओं को ऋण प्राप्त करने के लिए बैंकों से जुड़ने में भी मदद करते हैं। यह परियोजना समुदाय की मदद के लिए अन्य कार्य भी करती है, जैसे कृषि और स्वास्थ्य देखभाल इत्यादि।

2. शोध विधि

उपरोक्त आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न मापदंडों पर विस्तृत जानकारी और आकड़ों की आवश्यकता हुई है। राष्ट्रीय जनसंख्या जनगणना, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, आर्थिक जनगणना, विश्व बैंक, बीआरएलपी से एकत्र किया गया द्वितीयक आंकड़े का उपयोग किया गया है। संस्थानों और व्यक्तियों द्वारा किए गए विभिन्न अध्ययनों तथा केंद्र और राज्य सरकार के विभिन्न प्रकाशनों और सांख्यिकीय रिकॉर्ड से एकत्र की गई जानकारी का भी उपयोग किया गया है।

3. उद्देश्य

1. बिहार में जीविका की वर्तमान प्रवृत्ति और संरचना को समझना।
2. बिहार में जीविका के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विकास का विश्लेषण करना।

वित्तीय वर्ष	निधि आवंटित	कवर किये गये जिले	लक्षित स्वयं सहायता समूह	लाभूक स्वयं सहायता समूह	वितरित बकरियों की संख्या
2016-17	9.96cr	7	8300	8300	24900
2017-18	4.80cr	8	4003	4003	12009
2018-19	4.61cr	9	3849	3849	11547
2019-20	15.46cr	12	12889	12883	38649
Total	19.37		29035	29035	87105

बजट वित्तीय वर्ष 2022-23 मे यह योजना बनाई गई है । प्रारंभ में 465 नोडल ग्राम संगठनों एवम 2325 स्वयं सहायता समूहों को आच्छादित करते हुए गतिविधि शुरू की गई है ।

पशुधन कार्य योजना 2022-2023

आजीविका - निर्माता समूह गठन		(एनआरएलएम)	(एनआरईटीपी+बीटीडीपी)	कुल (एनआरएलएम+एनआरईटीपी+बीटीडीपी)
उत्पादक समूह	डेयरी (एमपीपी)	-	116	116
	बकरी पालन (उत्पादक समूह)	105	245	350
	मछली पालन (नोडल ग्राम संगठन)	130	335	465
	पशु सखी विकास	501	1168	1669
स्वास्थ्य शिविर	छोटा जानवर	24	56	80
	बड़ा जानवर	48	112	160
	मुर्गी पालन (सब्सिडी)	15224	35522	50746

लाभूक परिवार	डेरी (डीसीएस+केएमएमपीसीएल)	12000	45228	57228
	बकरी पालन (पीजी+पी.एस+एसजेजीपीसीएल)	79200	184800	264000
	छोटा जानवर का शिविर (एचएच)	6000	14000	20000
	बड़ा जानवर का शिविर (एचएच)	12000	28000	40000
	मछली पालन	650	1675	2325
कुल परिवार		125074	309225	4,342,99

जीविका के वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए वार्षिक कार्य योजना एवं बजट वार्षिक कार्य योजना

क्र. संख्या	संकेतक	एनआरएलएम	एनआरईटीपी	बीटीडीपी	बीआरएलपीएस
ब्लॉकों की संख्या		145	89	300	534
क	समुदाय आधारित संगठन का गठन				
1	स्वयं सहायता समूहों के गठन की संख्या	2711	2012	6083	10806
2	स्वयं सहायता समूहों मे जुड़े परिवारों की संख्या	31176	23138	69954	124268
3	ग्राम संगठन का गठन	906	851	1663	3420
4	संकुल स्तरीय संघ का गठन	25	12	45	82
ख	समुदाय आधारित संगठनो की उपलब्ध राशि				
1	स्वयं सहायता समूहों को उपलब्ध परिक्रमी निधि	51060	56580	52553	160193
2	स्वयं सहायता समूहों को समुदाय प्रारम्भिक राशि (सीआईएफ)	41594	40532	53998	136124
3	ग्राम संगठन को भेदता न्यूनीकरण निधि (वीआरएफ)	2347	1041	3577	6965
ग	वित्तीय समावेशन				
1	स्वयं सहायता समूहों में बैंक साख सुविधा	116775	63858	239367	420000
2	स्वयं सहायता समूह को प्राप्त साख राशि	189064	103389	387547	680000
3	बैंक सखी के रूप में कार्यरत स्वयं सहायता समूह सदस्यों की संख्या	1146	606	1947	3699
4	स्वयं सहायता समूह सदस्यों ज़िंदगी बीमा (प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना) (संख्या लाख में)	14.5	8.5	27	50
घ	आजीविका				
1	महिला किसानों की संख्या कर किया गया एग्रो इकोलॉजिकल प्रैक्टिकल इंटरवेंशन	173698	176302	179302	529302
2	पशुधन मे सम्मलीत स्वयं सहायता समूहों की संख्या	75000	50000	125000	250000

3	पशुधन आधारित उधोग	0	3	2	5
4	फार्मिंग इंटरवेंशन इंटरप्राइज मे सम्मलीत स्वयं सहायता समूह की संख्या	16183	6650	3750	26583
ड.	सतत जीविकोपार्जन योजना (एसजेवाई)				
1	लाभूक्त परिवारों की संख्या				55802
2	एलजीएएफ प्राप्त परिवारों की संख्या				56398
3	एलआईएफ प्राप्त परिवारों की संख्या				105750
च	कौशल और रोजगार				
1	प्रशिक्षित युवा				25344
2	रोजगार प्राप्त युवा				17741
छ	लोहिया स्वचहच बिहार योजना				
1	निर्माण किये जाने वाले सामुदायिक सवछत्ता परिसर				3000
2	ठोस तरल अवशिष्ठ प्रबंधन में शामिल गांवों की संख्या				11082

4. निष्कर्ष

जीविका महिलाओं को सामाजिक रूप से एकजुट करने और सामाजिक एजेंसियों के गठन करने में सफल रही है, जिसके परिणामस्वरूप समूह एकता बढ़ती है और संयुक्त विकास लक्ष्यों को पूरा किया जाता है। एसएचजी महिलाओं की धारणा कर्मचारियों और नियोक्ताओं से भिन्न है।

वे इसे अपनी पहचान, आशा की एक झलक जैसे संगठन के रूप में देखते हैं।यह गरीब महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हें सामाजिक शिक्षा के लिए एक मंच देने में सफल है। इसके अलावा, यह प्लेटफ़ॉर्म न्यूनतम लागत पर कई सरकारी सेवाओं की डिलीवरी के लिए उपयोगी है। वर्तमान अध्ययन के अनुसार, समूह के सदस्यों को आर्थिक रूप से तब लाभ होता है जब वे पर्याप्त परिपक्व उम्र (पांच वर्ष से अधिक) तक पहुंचते हैं, अपनी पोषण स्थिति में सुधार करते हैं, और टीवी और मोबाइल फोन जैसी उपभोक्ता वस्तुएं खरीदना शुरू करते हैं।

ब स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की मौजूदगी से मातृ मृत्यु दर, शिक्षा, संस्थागत प्रसव और गर्भधारण के बीच का अंतर के बारे में गांव में जागरूकता का स्तर बेहतर हुआ है। यह पाया गया है कि जीविका से जुड़े महिलाओं का स्वच्छता से गहरा संबंध है, वे सैनिटरी नैपकिन की आवश्यकता के बारे में पूरी तरह से जागरूक हैं और उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन और पोषण अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जो परिवार अपनी बेटियों की शिक्षा और भविष्य की नौकरी के विकल्पों के बारे में निर्णय लेते हैं, उनमें महिलाएं सक्रिय रूप से शामिल होती हैं। सुशिक्षित माताएँ बचपन की प्रारंभिक शिक्षा से प्राप्त ज्ञान का उपयोग अपने बच्चों के भविष्य के पेशेवर पथ को निर्धारित करने के लिए करती हैं।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ.

परियोजना कार्यान्वयन योजना, बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसायटी, पटना बीआरएलपीएस (2007)

रेनू सिंह : स्वच्छ भारत मिशन-स्वच्छता की स्थिति में सुधार में ग्रामीण भूमिका - 2019.

वार्षिक रिपोर्ट जीविका: ग्रामीण विकास विभाग बिहार सरकार – 2022

चंद्रभान यादव: महिलाओं की सफलता का सशक्त माध्यम स्वयं सहायता समूह,कुरुक्षेत्र-जुलाई, 2013